वर्तनी

वर्तनी को हिज्जे या अंग्रेजी में स्पेलिंग कहते हैं। यानी किसी शब्द, स्वर, व्यंजन, अनुनासिक, मात्रा आदि के क्रमशः स्थान के निर्धारण प्रयोग को वर्तनी कहा जाता है।

वर्तनी में शुद्ध तथा अशुद्ध रूपों के चलते कोई विशेष समस्या नहीं होती है क्योंकि अशुद्ध रूप को सुधारा जा सकता है। समस्या वहाँ होती है जहाँ शुद्ध रूप ही विवादास्पद हो जाता है। कोई जायेंगे लिखता है, कोई जाएँगे लिखता है तो कोई लिखता है जायँगे। वर्तनी का विवाद विभक्ति की स्थिति को लेकर भी रहा है। कोई 'राम को' सही मानता है तो कोई 'रामको'; जैसे आपको।

विवाद के विवरण से बचते हुए यहाँ हम कुछ विवादास्पद प्रयोगों के अपेक्षाकृत निर्णीत और आधुनिकतम मान्य रूप के कुछ उदाहरण देखेंगे।

हमें ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ किसी वर्ण के दो रूप या किसी शब्द की दो वर्तनियाँ पूर्ण शुद्ध हैं वहाँ विकल्प के साथ दोनों को स्वीकार करें। ऐसे उदाहरणों में चिह्न और चिह्न, या सिद्धि और सिद्धि को देखा जा सकता है। प्रयोग या रूप का वैविध्य समृद्धि का सूचक है। विवाद खत्म करें; वैविध्य नहीं।

कुछ विवादास्पद प्रयोगों के शुद्ध रूप :

1. आइए, जाइए, गाइए, दिखाइए, कीजिए, लीजिए, पीजिए, उठिए, बैठिए, बुलाइए, रहिए, चलिए, करिए, पढ़िए आदि।
2. नई, विजयी, पढ़ाई, लिखाई, खिंचाई, कमाई आदि।
3. जाएगा, पाएगा, खाएगा, करवाएगा आदि।
4. हुए, लिए, कछुए, कौए आदि।
5. दन्त-दंत, पम्प-पंप, चञ्चल-चंचल, कंक-कङ्क, दोनों रूप विकल्प से शुद्ध हैं।
6. हजारीप्रसाद द्विवेदी, महावीरप्रसाद द्विवेदी, सूरदास, कबीरदास, तुलसीदास, बिहारीलाल आदि ही सही हैं। प्रसाद-दास आदि अलग करके नहीं लिखना चाहिए।
7. विभक्तियों को, संज्ञा पदों को अलग करके लिखना ठीक है जबकि सर्वनाम के साथ मिलाकर लिखना सर्वमान्य हो चुका है—
   संज्ञा - राम की, मोहन को, श्याम के लिए, पेड़ से, घर में, आदि सर्वमान्य हैं।
   सर्वनाम - आपकी, उनको, उसके लिए, आपसे, मुझसे, तुममें आदि सर्वमान्य हो चुके हैं।
8. मिलकर जाना, पूछकर आना चाहिए, खाकर बैठो, करके बोलो आदि प्रयोग शुद्ध सर्वमान्य हैं।
9. पंचमाक्षर के विकल्प में अनुस्वार दें, परंतु स्वरगत अनुनासिकता के लिए चंद्रबिंदु ही मान्य है।
   कान्ति - कांति, हँसना, डँसना, फँसना, खाँसी आदि।
10. शिरोरेखा के ऊपर कोई चिह्न ि, े, ै, ो, ौ, ँ, '' आदि रहने पर चंद्रबिंदु की भूमिका में केवल बिंदु दिया जाता है, परंतु उसे अनुस्वार कहना ठीक नहीं। जैसे - खायें, जायें आदि।
11. संज्ञा, संयत, अंश, संरक्षण, संवाद, संशोधन आदि में अनिवार्यतः अनुस्वार का प्रयोग ही मान्य है। इनमें पंचमाक्षर का संयोग नहीं चल सकता।

◆ ◆ ◆